विचार बिन्दु

रूप की पहुँच आँखों तक है, गुण आत्मा को जीतते हैं। –पोप

राजस्थान में ट्रैफिक जाम नासूर बन रहा है

राजस्थान, जो अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर और रंगीन जीवनशैली के लिए जाना जाता है, आज एक गंभीर समस्या से जूझ रहा है। शहरी और ग्रामीण मार्गों पर बढ़ता ट्रैफिक जाम। पहले जहां सड़क यात्रा अपेक्षाकृत सुगम और त्वरित मानी जाती थी, अब यातायात जाम इतनी आम बात हो चुकी है कि यह न केवल समय की बर्बादी बन गया है बल्कि यह आर्थिक क्षति, पर्यावरण प्रदूषण और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट का कारण भी बन रहा है। यह समस्या केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं रही; छोटे शहर, कस्बे और प्रमुख पर्यटन मार्ग भी इससे प्रभावित हैं। राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में बढ़ते वाहन, अव्यवस्थित पार्किंग, संकरे मार्ग, सार्वजनिक परिवहन की कमी और अनुचित ट्रैफिक प्रबंधन ने जाम को नासूर का रूप दे दिया है। इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए क्योंकि इसका प्रभाव केवल यात्रा तक सीमित नहीं है। स्वास्थ्य, व्यवसाय और सामाजिक गतिशीलता भी प्रभावित हो रही हैं।

ट्रैफिक जाम का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव समय की हानि है। प्रतिदिन कार्यस्थल, विद्यालय, अस्पताल तक पहुंचने में लोग घंटों फंसते हैं। यह समय हानि व्यक्तिगत उत्पादकता को कम करती है और कार्यालय, दुकानें, और सेवाओं के संचालन को बाधित करती है। खासकर कामकाजी वर्ग और छोटे व्यवसायियों के लिए यह नुकसान सीधे आर्थिक घाटे में बदल जाता है। ट्रैफिक जाम के कारण उपलब्ध समय में कटौती से परिवारिक जीवन और सामाजिक गतिविधियों पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है लोग थके हुए और तनावग्रस्त होकर घर पहुंचते हैं, जिससे पारिवारिक मेलजोल प्रभावित होता है।

आर्थिक दृष्टि से भी जाम गम्भीर समस्या है। ईंधन की बर्बादी, माल ढुलाई में देरी, और समय पर सेवाओं के न मिलने से व्यापारिक लागत बढ़ जाती है। परिवहन–लोजिस्टिक्स पर निर्भर उद्योगों में डिलीवरी–समय का अनियंत्रित बढ़ना आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्रभावित करता है। छोटे व्यापार जो ताजा सामान (फल, सब्ज़ी, दूध) पर निर्भर करते हैं, उन्हें नुकसान होता है क्योंकि समय पर डिलीवरी न होने से माल खराब हो सकता है। इसके अलावा, जाम के कारण सार्वजनिक परिवहन की विश्वसनीयता घटती है और लोग निजी वाहनों का उपयोग बढ़ा देते हैं, जिससे समस्या और जटिल होती जा रही है।

पर्यावरण और स्वास्थ्य पर भी ट्रैफिक जाम का बुरा असर होता है। लंबी अवधि तक चलने वाली देरी वाहन उत्सर्जन को बढ़ाती है कारों और दोपहिया वाहनों का इंजन खराबी के साथ चलते रहने पर हवा में सल्फर, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सूक्ष्म कण (2.5, 10) का स्तर बढ़ता है। यह न केवल शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को तीव्र करता है बल्कि श्वसन रोगों, हृदय–सम्बंधी समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि करती है। राजस्थान जैसे सुखाग्रस्त और शुष्क वातावरण वाले स्थानों पर वायु गुणवत्ता का और बिगड़ना सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये चिंता का विषय है।

ट्रैफिक जाम की जड़ें कई कारकों में निहित हैं। सबसे महत्वपूर्ण कारणों में बढ़ती आबादी और वाहन संख्या है। पिछले दशक में निजी वाहनों, विशेषकर टू–व्हीलर और छोटे कारों की उपलब्धता और खरीद शक्ति में वृद्धि ने सड़कों पर दबाव बढ़ा दिया है। साथ ही शहरीकरण के कारण लोग शहरों की ओर प्रवास कर रहे हैं; नतीजतन आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्र सघन हो रहे हैं जबकि सड़कों का विस्तार उसी अनुपात में नहीं हुआ। पुराने शहर नियोजन, संकरे पुराने मार्ग और नए विकास के लिए पर्याप्त सड़क–नेटवर्क न होना भी बड़ा कारण है।

सार्वजनिक परिवहन की अप्रत्यक्षता और असुविधा। राजस्थान के कई शहरों में बस–सेवा अव्यवस्थित या अपर्याप्त है समय–सारिणी, आवृत्ति और मार्गों की योजना प्रभावी नहीं है। लोग समय की पाबंदी और सुविधा के कारण निजी वाहन चुनते हैं। तीसरा कारण पार्किंग की कमी और अवैध पार्किंग है। व्यापारिक क्षेत्रों और बाजारों में वाहन अक्सर सड़कों के किनारे खड़े रहते हैं, जिससे गति कम होती है और मार्ग संकरे हो जाते हैं। सड़क संरचना और सिग्नलिंग की कमी है, कई जगहों पर जंक्शन और चौराहों पर उचित ट्रैफिक सिग्नल, लेन मार्किंग और मोड़ के लिए अस्थायी जगह नहीं है। कुछ स्थानों पर लोकल मार्केट, स्कूल और सरकारी दफ्तरों के सामने सड़कें छोटी पड़ जाती हैं, जो जाम को आम बनाती हैं।

पर्यावरण और स्वास्थ्य पर भी ट्रैफिक जाम का बुरा असर होता है। लंबी अवधि तक चलने वाली देरी वाहन उत्सर्जन को बढ़ाती है कारों और दोपहिया वाहनों का इंजन खराबी के साथ चलते रहने पर हवा में सल्फर, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सूक्ष्म कण (2.5, 10) का स्तर बढ़ता है। यह न केवल शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को तीव्र करता है बल्कि श्वसन रोगों, हृदय-सम्बंधी समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि करती है।

स्थानीय प्रशासन और नागरिक व्यवहार में भी जिम्मेदारी साझा है। अक्सर सड़क नियमों का पालन नहीं किया जाता; गलत तरीके से ओवरटेकिंग, नियमों का उल्लंघन, और रेड लाइट को पार करना सामान्य दृश्य हैं। इसके अलावा, निर्माण कार्य और रोड–वर्क के दौरान समुचित ट्रैफिक प्रबंधन के अभाव में जाम और बढ़ जाता है। मौसम के हिसाब से बारिश या त्योहारों के दौरान यातायात और अधिक जटिल हो जाता है। पर्यटन के मौसम में प्रमुख पर्यटक मार्गों और शहरों में भीड़ बढ़ती है, जिससे अस्थायी जाम बनते हैं।

इस समस्या के समुचित समाधान के लिए बहु–आयामी और दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है। सबसे पहले सड़कों और यातायात बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण करना होगा। इसमें प्रमुख शहरों में स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नल, बेहतर लेन–डिजाइन, फ्लाईओवर, रिंग रोड और सड़कों का चौड़ीकरण शामिल है। परन्तु केवल सड़कों का चौड़ीकरण पर्याप्त नहीं है; दीर्घकालिक योजना में सार्वजनिक परिवहन का सशक्तिकरण आवश्यक है। अपने–आप में बेहतर बस–नेटवर्क, बीआरटी (बस रैपिड ट्रांज़िट) जैसे विकल्प, और इंटरसिटी कनेक्टिविटी सुधार कर निजी वाहन पर निर्भरता कम की जा सकती है।

मजबूत और भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन के साथ–साथ पार्क–एंड–राइड सुविधाएँ, साइकिल लेन और पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित फुटपाथ विकसित करने चाहिए। छोटे शहरों और कस्बों में भी साइकिल तथा ऑटो–रिक्शा जैसे लास्ट–माइल विकल्पों को व्यवस्थित करने से हालात सुधर सकते हैं। पार्किंग प्रबंधन के लिये डिजिटल प्रणालियाँ, स्मार्ट पार्किंग और पार्किंग शुल्क का विवेकपूर्ण उपयोग व्यवहार बदल सकता है, जिससे सड़क किनारे पार्किंग में कमी आएगी और मार्ग खुलेंगे।

ट्रैफिक नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के लिये ई–निगरानी और एनफोर्समेंट जरूरी है। सीसीटीवी, रेड–लाइट कैमरा, और चालान–आधारित दंड व्यवस्था से नियमों के उल्लंघन पर तुरंत कार्रवाई हो सकती है। इसके साथ ही स्थानीय प्रशासन को सड़क निर्माण या मरम्मत के दौरान वैकल्पिक मार्ग और सुव्यवस्थित सूचना देनी चाहिए ताकि नागरिक पूर्व तैयारी कर सकें। न केवल दंड व्यवस्था, बल्कि जागरूकता अभियानों से नागरिकों की सोच बदलना जरूरी है, स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक संगठनों के माध्यम से सुरक्षित और व्यस्थित ड्राइविंग की शिक्षा दी जाए।

टेक्नोलॉजी का उपयोग भी अहम भूमिका निभा सकता है। स्मार्ट सिटी पहल के तहत ट्रैफिक डेटा का विश्लेषण कर समयानुकूल ट्रैफिक नियंत्रण, रियल–टाइम सूचना और यातायात के वैकल्पिक मार्ग सुझाए जा सकते हैं। मोबाइल ऐप्स और नेविगेशन सेवा प्रदाताओं के साथ तालमेल करके ड्राइवरों को जाम से बचने के उपाय सुझाए जा सकते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने को बढ़ावा देने से प्रदूषण में कमी आएगी, परंतु इसके साथ चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर और नियोजन भी आवश्यक है ताकि नए वाहन और चार्जिंग स्टेशन ट्रैफिक का नया बोझ न बनें।

नियोजन और नीतिगत स्तर पर ज़रूरी है कि विकास योजनाएँ क्षेत्रीय और समन्वित हों। भूमि उपयोग नीति, आवासीय और वाणिज्यिक विकास, और परिवहन योजनाएँ आपस में जुड़ी रहें। शहरों के वृद्धि मानचित्रों और ट्रैफिक प्रक्षेपणों के आधार पर रोड नेटवर्क और सार्वजनिक परिवहन का पूर्व–निर्धारण करने से भविष्य में होने वाली जाम की गंभीरता घटाई जा सकती है। इसके लिए पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप के जरिए निवेश, और राज्य सरकार के महत्वाकांक्षी परिवहन योजनाओं को तेज़ी से लागू करना आवश्यक है।

समाज की भूमिका को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। नागरिक समन्वय समितियाँ, व्यापार संघ और स्कूल–स्तर पर समय सारिणी समायोजन (जैसे स्कूल शुरू होने के समय में फेरबदल) जैसे स्थानीय कदम भी जाम को कम कर सकते हैं। त्यौहार और बड़ी सार्वजनिक गतिविधियों के समय ट्रैफिक मैनेजमेंट के लिये विशेष टीमों और स्वयंसेवकों का उपयोग प्रभावी परिणाम दे सकता है। स्थानीय मीडिया और विज्ञापन के माध्यम से जागरूकता फैलाने से नागरिकों में अनुचित पार्किंग और गैरकानूनी ड्राइविंग के रूप में सामाजिक दंड बन सकता है।

राजस्थान में ट्रैफिक जाम का निवारण केवल तकनीकी और वित्तीय उपायों तक सीमित नहीं है यह सामाजिक व्यवहार में बदलाव, नीतिगत दृढ़ता और दीर्घकालिक योजना का संयोग मांगता है। जब तक हम सार्वजनिक परिवहन को विश्वसनीय और सुविधाजनक नहीं बनाएंगे, तब तक निजी वाहनों की बढ़ती संख्या और उसके परिणाम बने रहेंगे। इसी तरह, जब तक नागरिक नियमों का सम्मान करना और साझा समाधान अपनाना नहीं सीखेंगे, तब तक छोटे–छोटे उपाय भी स्थायी प्रभाव नहीं डाल पाएंगे।

ट्रैफिक जाम को नासूर मानकर हल करना तभी संभव है जब राज्य सरकार, नगर निगम, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र मिलकर एक समग्र दृष्टि के साथ कार्य करें। रोड इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश, स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट, सस्ती और भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन तथा नागरिक जागरूकता ये चार स्तम्भ मिलकर ही इस समस्या को जड़ से मिटा सकते हैं। यदि आज हम सक्रिय रूप से कदम नहीं उठाएंगे, तो आने वाले वर्षों में बढ़ती आबादी, यात्री और वाहन राजस्थान की सड़कों को और अधिक घुटनपूर्ण बना देंगे। इसलिए समय रहते योजनाबद्ध, समन्वित और टिकाऊ उपाय अपनाना अब प्राथमिकता होनी चाहिए।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

पुरानी वर्जनाओं, दकियानुसी विचारों तथा तानाशाही को तोड़ती थी प्रेमचंदजी की कहानियां व उपन्यास

31 जुलाई, मुंशी प्रेमचन्द जी की 146वीं जयंती पर विशेष...........

प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना

कहानियों के मील का पत्थर भीष्म पितामह, पुरोधा, महा झूमर, सुमेरू पर्वत, जामवन्त, कायस्थ–कुल गौरव रत्न, हिन्दी व उर्दु भाषा के शेक्सपीयर व जन्मजात प्रतिभा युक्त मुंशी प्रेमचन्द जी, जो कि महानतम कहानीकार व उपन्यास सम्राट तथा एक महाकवि थे। सीधी सादी गंभीर बेलोस बेमुरव्वत व बेमोहब्बत, प्रभावी शक्ल के मालिक जिनका नाम धनपत राय भी था, जो कि बिल्कुल गंवई, कस्बाई, भुच्च शक्ल व सांवले रंग के मालिक, जो सामान्यत बंद गाढ़े का कुर्ता पजामा तथा चमरौधीं जूता पहनते थे जो चर्र–चर्र की आवाज करते थे, एक अलग ही शख्सियत, व्यक्तित्व था, जो कि लोगों पर आसानी से हावी हो जाता था। मुंशी जी 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के लमही गाँव में जन्मे थे। परमादरणीय व अति सम्माननीय मुंशी जी की लेखनी हिन्दी व उर्दु दोनों भाषाओं में लाजवाब थी, त्वरित व समान चलती थी व आज भी एक वैश्विक व अन्तराष्ट्रीय पहचान बनी हुई है।

प्रेमचन्दजी ने समकालिन व सामयिक व यथार्थ परख जमीनी दुनिया से जुडे.हुए विषयों पर लगभग 300 से ज्यादा कहानियाँ लिखी व 15 के आसपास उपन्यास, 10 अनुवाद, 7 बाल पुस्तकें व तीन नाटक लिखे तथा सैंकडों–हजारों पन्नों के लेख संपादकीय, पत्रकारिता लेखन, भूमिका व भाषण लेखन साथ ही साथ काफी सारी रचनाएं व पत्र आदि लिखे, जो कि अपने आप में बेमिसाल तथा बेजोड़ थे। उनकी मुख्य कहानियों में–"ठाकुर का कुआ, पूस की रात, दो बैलों की कथा, पंच परमेश्वर, कफ़न, बड़े भाई साहब, नशा, बू–सजयी काकी, शतरंज के खिलाड़ी, नमक का दरोगा, ईदगाह तथा मंत्र आदि–आदि व उपन्यास, रंग भूमि, गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि आदि व आखरी अधूरा लिखित उपन्यास 'मंगलसूत्र' था। ये बात आज भी 100 फीसदी सही है कि भारत की अनुमानतः 76 प्रतिशत आबादी छोटे–छोटे गाँव, कस्बों–ढाणियों में बसती–विचरती है, आदरणीय प्रेमचन्द जी ने इन्हीं सब पर अपना पूरा साहित्य उड़ेला।

प्रेमचन्द जी की रचनाएं आज भी कालजयी व प्रासंगिक है। उन्हें हिन्दी का शेक्सपीयर यूही नहीं कहा जाता है। उनकी प्रत्येक रचना, कहानी व उपन्यास हमेशा एक परम्परा व काली सच्चाई के इर्द–गिर्द घूमते हैं। उनका असली नाम धनपत राय था व उन्होंने 1901 में उपन्यास लिखना शुरू किया तथा कहानियां लगभग 1907 से लिखना शुरू की। उनकी कहानियों व उपन्यासों में जमकर व तबीयत से लोकोक्तियों, कहावतों, मुहावरों तथा गंवई शब्दों व भाषा का उपयोग होता था।

1910 में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान उनकी कहानी 'सोजे वतन' जब्त कर ली गई तथा उसकी अनेकों प्रतियां फाड़ दी व जला दी गई। उस समय अंग्रेजों के शासन काल में जब लोग कानपुर से प्रसारित होने वाले अखबार में 'रफ्तार–ऐ–जमाना' जैसे कॉलम में वो लिखा करते थे व लोग उसे पढ़कर उनकी सराहना करते थे। अतः वो एक अच्छे पत्रकार व कवि भी थे। उर्दू भाषा में वो नवाबराय के नाम से लिखते थे। उन्होनें हिन्दी कहानियों, उपन्यास, रचनाओं व हिन्दी साहित्य को नये विविधा विविध बहु आयाम दिये। 1923 में उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की व 1930 में 'हंस पत्रिका' का प्रकाशन शुरू किया। साथ ही साथ कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन भी किया, उनमें प्रमुखतः– 'हंस, जागरण, मर्यादा तथा माधुरी' जैसी पत्रिकाएं भी थी।

लगभग 300 से ज्यादा लिखी कहानियों में आम आदमी की लिज लिजी जिन्दगी, गरीबी–अमीरी व उनकी चुभन, घुटन, प्रतिशोध, कसक, अंधविश्वास, दंभ व घमंड तथा रूढ़िवादी परंपराओं पर भरपूर प्रहार किया व हरेक जन व पाठकों को सोचने पर मजबूर किया। साथ ही साथ मानवीय मूल्यों को भी सहेज कर रखा जो उनकी कहानियों में स्प–ुनवजयट परिलक्षित व प्रभावी होते दिखते है। 1910 की घटना के बाद उनके परम मित्र दया नारायण निगम जो कि 'जमाना' अखबार के संपादक थे, उन्होंने, उन्हें प्रेमचन्द नाम से लिखने की सलाह दी तब उन्होंने नवाबराय नाम के बजाय प्रेमचन्द नाम से लिखना शुरू किया।

20वीं सदी के भारत में 1935 तक, उस दौरान जातिवाद, छुआछुत, संकीर्णता की भावना, साम्प्रादायिक संकीर्णता, ऊँच–नीच का भेदभाव, गरीबों मजदूरों व श्रमिको का शोषण तो चलता ही था तथा इन सबसे अलग व विशेषकर महिलाओं को हेय व हीनदृष्टि से देखना अपने सर्वोच्चतम शिखर पर था। उस समय अंग्रेजों व फिरंगियों के राज मे अंग्रेज लोग यही सोचते थे कि साहित्य लिखना, समझना व पढ़ना सिर्फ अंग्रेजों को ही आता है या उन्हीं का ये सर्वसिद्ध अधिकार है। इस विषम काल में एक आवाज व लेखनी प्रेमचन्द जी के रूप में ऐसी निकली, जिसकी गूंज आज तक गूंज रही है, लिखी व बोली जिन्होंने पूरे अंग्रेजी राज के साहित्यकारों व लेखकों को हिन्दी में अपनी कहानियां व उपन्यास लिखकर संपूर्ण टक्कर दी व उन्हें सोचने, विचारने पर मजबूर किया।

'पंच परमेश्वर' कहानी में जुम्मन शेख व अलगू चौधरी के माध्यम से सत्य अंहिसा व इंसाफ की जीत को दिखाया ना कि दोस्ती के पक्षपात को। नाटक 'कर्बला' में हिन्दू–मुस्लिम शक्ति व एकता का संदेश दिया। प्रेमचन्द जी ने 'निर्मला' उपन्यास में विधवा विवाह का समर्थन किया तो उन्होंने उसे अपने जीवन में उतारा तथा स्वयं का विवाह शिवरानी देवी (जो कि स्वयं एक बाल विधवा थी।) से करके व्यवहार में उसे सिद्ध व लागू किया।

उस काल में उन्होंने सम सामयिक विषयों पर व सारी प्रचलित समस्याओं व मान्यताओं को सामने रखकर लिखा। 'सेवा सदन' (बाजार–ए–हुस्न), गबन, निर्मला, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, रंगभूमि जैसे अनेकों उपन्यास लिखे, जिनकी आज भी कोई काट नहीं है।

'गोदान' उपन्यास तो पूरे ग्रामीण जीवन व परिवेश तथा रूढ़िवादी प्राचीन परंपराओं को दर्शाता, दिखाता है। उन्होंने सामाजिक कुरूतियों, अंधविश्वास व ग्रामीण समस्याओं से निकलकर लोगों को अपनी लेखनी के माध्यम से बताया, समझाया व लोहा मनवाया। प्रेमचन्द जी संभवतः सदी के प्रथम ऐसे रचनाकार व साहित्यकार थे, जिन्होंने उपन्यास, कहानी व कथा लेखन को कपोल–कल्पित कल्पनाओं तथा कल्पनालोक के प्रभाव से निकलकर व लोगों को निकालकर आमजनों को वास्तविकता व जमीनी हकीकतों व विशुद्ध यथार्थ से अवगत करवाया।

उन्होंने सरल, सहज व सामान्य, जन साधारण वेशभूषा का उपयोग किया व उन्हें अपने प्रयोग में लाये। उपन्यास के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान को देखते हुए, बंगाल के योग्य, प्रख्यात व लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार शरदचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास–सम्राट' कहकर संबोधित किया। कहानी 'मंत्र' ये दर्शाती है कि कभी भी अपने चिकित्सकीय पेशे व पैसे का घमंड़ नहीं करें, हो सकता है आपको भी कभी गरीब 'भगत' जैसे आदमी से मदद लेनी पड़े।

1930 के आस पास उनका गांधीवाद से मोहभंग हो गया। 'गोदान' इसका सशक्त उदाहरण है इसमें किसान के शोषण, गरीबी तथा उसकी दुर्दशा का ऐसा भयावह चित्रण किया है कि अंत में किसान पात्र 'होरी' की मृत्यु ने पाठकों के अर्न्तमन को अंदर तक झकझोर दिया। कहानी 'ईदगाह' के माध्यम से प्रेमचन्द जी ने यह संदेश दिया कि गरीबी बच्चों को उम्र से पूर्व ही बड़ा बना देती है।

असल में व अंत में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि प्रेमचन्द जी कहानी, कविता, पत्रकारिता, संपादन व लेखन क्षेत्र तथा उपन्यास लिखने के संबंध में वे साहित्य का हिमालय व सुमेरू पर्वत थे जिनकी समस्त रचनाएं कालजयी है व वे आज भी बेजोड़ है, चंद पन्नों व पंक्तियों में उन्हें व उनके साहित्य को पूर्णरूपेण समेटना मुश्किल ही नही नामुमकिन है। उनकी मृत्यु 8 अक्टुबर, 1936 को 56 वर्ष की अल्प आयु में 'जलोदर' रोग के द्वारा हुई। वे हमेशा आडम्बर व दिखावे से दूर रहते थे तथा अपना काम खुद करना पसन्द करते थे, अगर वे 35–40 वर्ष और जीते तो ऐसे महाकाव्य, उपन्यास लिख जाते जिनकी कल्पना करना, काफी अतीत से परे व कठिन है। उनकी जयंती पर उन्हें सहस्त्र कोटि नमन।

–प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना,
वरिष्ठ आचार्य व होम्योपैथिक चिकित्सक।

मुंशी प्रेमचंद – फटे जूते और फकीराना

गोवर्धन दास बिन्नाणी

बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्यायजी ने मुँशी प्रेमचंद जी के बेहतरीन उपन्यासों और कहानियों को देखकर उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी थी। इसलिये 'उपन्यास सम्राट' मुँशी प्रेमचंद पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। अतः संक्षेप में, साहित्य को समाज का दर्पण बताते हुवे कथा सम्राट मुँशी प्रेमचंद जी ने जैसा बताया उसका निचोड़ इस प्रकार है –

1 साहित्य समाज को अपने किये हुए कार्य को सही आइना दिखाने का काम करता है।

2 साहित्य समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

3 भटकते हुए समाज को सही दिशा दिखाता है अर्थात हम कहाँ है और कहाँ तक दूरी तय करनी है।

4 साहित्य में सबका हित

समाहित रहता है। जिसका मतलब है साहित्य में सभ्य और संस्कारी समाज की कल्पना समाहित है।

मुँशी प्रेमचंदजी की रचनाएँ सामाजिक यथार्थ को चित्रित करती हैं और उनके कथ्य में न केवल मानवता, नैतिकता और समाज की समस्याएँ प्रमुख रूप में मिलती हैं बल्कि उनके आचरण में भी परिलक्षित हुवे हैं।

उदाहरण के तौर पर आप जब उनका अपनी पत्नी के साथ फोटो को देखते हैं तब पाते हैं कि वे फटे जूते पहने हुये हैं।

इस फोटो को देखकर हिन्दी साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से एक हरिशंकर परसाई जी ने एक लेख लिखा था जिसमें उन्होंने कहा था –

अ "सोचता हूँ–फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी ?"

ब नहीं, इस आदमी की अलग–अलग पोशाकें नहीं होंगी–इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।

स यह पोशाक बदल भी नहीं सकता क्योंकि इसने भारत की जनता के मर्म को छुआ है इस की पोशाक के पीछे गोदान जैसे महाकाव्य की आदरांजली भी तो है।

अब अन्त में कथा–उपन्यास की दुनिया के सबसे प्रसिद्ध हस्ताक्षर मुँशी प्रेमचंद जी को जन्म – जयन्ती पर श्रद्धा पूर्वक शत–शत नमन करता हूँ ।

गोवर्धन दास बिन्नाणी
'राजा बाबू'

जैविक खेती की ओर बढ़ना होगा

प्रो .कैलाश सोडाणी

हजारों वर्षो से भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। शुद्ध प्राकृतिक पद्धति के माध्यम से ही देश ने कृषि के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है। जैविक कृषि ही भारत की पहचान रही है। जिस भूमि पर हमें वर्षो–वर्षो तक खेती करना है, अतः उसके उपजाऊपन को जीवित रखना हमारा प्राथमिक कर्तव्य है।

उत्पादित होने वाली खाद्य सामग्री को उपभोग करने वाले मनुष्य एवं जानवर दोनों के स्वास्थ्य के अनुकूल होना भी आवश्यक है। साथ ही पर्यावरण की पवित्रता भी बनी रहनी चाहिये। इसी जैविक खेती के आधार पर कभी भारत आर्थिक दृष्टि से दुनिया में समृद्ध देश था।

पिछले 50–60 वर्षों में कृषि उत्पादन की मात्रा को तेजी से बढाने के भंवरजाल में रासायनिक खादों का उपयोग बेहिसाब बढ़ गया। प्रारम्भ में उत्पादन अभिवृद्धि से किसान की आय में भी इजाफा होने लगा। वैसे यह अल्पकालीन था। तत्कालीन समय देश अनाज एवं अन्य खाद्य पदार्थों के अभाव को भी झेल रहा था। ऐसे समय में स्वयं किसान एवं देश को येन–केन प्रकार से कृषिजन्य खाद्य पदार्थों के उत्पादन की मात्रा में अभिवृद्धि आवश्यक लग रही थी। अनाज की कमी से पीडति भारत को आयात पर निर्भर रहना पड़ रहा था। परिस्थितियां इस प्रकार की थी कि रासायनिक खादों के उपयोग से खाद्य उत्पादन में अभिवृद्धि आवश्यक थी। फिर धीरे धीरे रासायनिक खाद हर खेत की आवश्यकता हो गयी। उत्पादन में वृद्धि सभी को अच्छी लगने लगी।

इस खेल में हमारे देश में विकसित होती हुई पाश्चात्य सोच की भूमिका भी जिम्मेदार है। इसी सोच के प्रभाव में हम भारतीय परम्पराओं एवं शोध को कमजोर मानने लग गये। तुलनात्मक रूप से पाश्चात्य विचारों को हमारे से प्रभावी मानने के चक्कर में गोबर की खाद को भूलने लग गये। यहीं से भाषा एवं वेशभूषा की भाँति खेती में भी गलत मार्ग पर आगे बढने लग गये। धीरे–धीरे फसलों के उत्पादन में अभिवृद्धि के साथ–साथ पर्यावरणीय क्षति की कीमत भी चुकानी पड़ने लगी। निरन्तर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से भूमि की उपजाऊपन में कमी, पोषक तत्वों का असन्तुलन तथा उत्पादन लागत में वृद्धि जैसी समस्याएँ सामने आयी। ऐसी खाद्य सामग्री व्यक्ति के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अनुकूल नहीं थी। कृषि वैज्ञानिकों के लिए यह चिन्ता एवं शोध का विषय हो गया। कृषि के उत्पादन वृद्धि के लिए रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के असन्तुलित उपयोग तथा जैविक स्त्रोतों के नगण्य प्रयोग के कारण कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव के रूप में एक नई समस्या सामने आयी। रासायनिक अवशेषों से युक्त खाद्य पदार्थों के लम्बे समय तक सेवन से अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ सामने आने लगी। पशुओं के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव दिखाई देने लगा।

परिणाम एवं परिस्थितियों के कारण अब लोगों को समझ में आने लग गया कि हमें जैविक खेती की ओर ही बढ़ना होगा। समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ने भी जैविक कृषि के महत्व को बढ ाया है। उपभोक्ता अधिक कीमत देकर भी जैविक उत्पाद को प्राथमिकता देने लग गये हैं। कम मात्रा में उत्पादन के बावजूद कुल कीमत रासायनिक उर्वरकों से युक्त उत्पादन से अधिक मिलने लग गयी। 2016 में सिक्किम देश का पहला पूर्ण जैविक राज्य बन गया। राज्य में रासायनिक उर्वरकों एवं रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग पूर्णतया समाप्त कर दिया गया। दुनिया के 180 देशों ने जैविक कृषि को अपनाया जा रहा है।

जैविक खेती करने वाले किसानों की संख्या के आधार पर भारत दुनिया में पहले स्थान पर है। क्षेत्रफल के आधार पर दूसरे स्थान पर है। जैविक खाद्य पदार्थों की लोकप्रियता और अधिक बाजार मूल्य के कारण इस क्षेत्र में लोग धोखाधडी करने लग गये हैं। उपभोक्ताओं को सावधान रहना होगा क्योंकि कुछ व्यापारी रासायनिक कृषि उत्पादों को जैविक उत्पाद बताकर अधिक कीमत पर बेच रहे हैं।

इस सम्बन्ध में सरकार के कठोर नियंत्रण की आवश्यकता है। जैविक कृषि को स्थाई, स्वास्थ्य–वर्धक एवं पर्यावरण के अनुकूल कृषि प्रणाली माना जाता है, फिर भी दुनिया के अधिकांश देशों में आर्थिक एवं बाजार सम्बन्धी चुनौतियों के कारण रासायनिक कृषि को आज भी प्राथमिकता दी जा रही है। जैविक प्रमाणन की प्रक्रिया भी बडी जटिल है। जैविक उत्पाद के क्रय–विक्रय के लिए अलग से मंडियाँ नहीं हैं। किसानों को तकनीकी ज्ञान की जानकारी नहीं है। उपरोक्त समस्याओं के बावजूद समाज को रासायनिक खेती को छोडना होगा। स्वस्थ एवं सुरक्षित भोजन, मिट्टी एवं जल की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए जैविक उत्पाद की ओर ही आगे बढ़ना होगा।

–प्रो. कैलाश सोडाणी, पूर्व कुलगुरु, वर्धमान महावीर खुला विवि, कोटा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 31 जुलाई, 2026

सावन मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, धनिष्ठा नक्षत्र सायं 7:27 तक, सौभाग्य योग रात्रि 11:54 तक, तैतिल करण दिन 10:01 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 6:38 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

राजयोग सूर्योदय से सायं 7:27 तक है। आज अशून्य शयन व्रत, जया पार्वती व्रत, जागरण है। पंचक प्रातः 6:38 से आरम्भ होंगे।

ग्रह स्थितिः सूर्य–कर्क, चन्द्रमा–मकर, मंगल–वृष, बुध–मिथुन, गुरू–कर्क, शुक्र–सिंह, शनि–मीन राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 7:34 तक, लाभ–अमृत 7:34 से 10:53 तक, शुभ 12:33 से 2:13 तक, चर 5:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

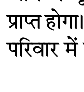

तुला

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

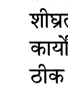

वृश्चिक

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

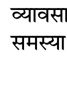

धनु

परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

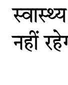

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आज परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

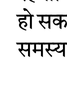

कुंभ

मानसिक तनाव दूर होगा। मनःस्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। कानूनी विवादों का निपटारा हो सकता है।

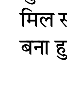

मीन

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।